क्षमता संवर्धन कार्यक्रम : हिंदी कार्यशाला

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा दसवीं कक्षा के हिंदी पाठ्यक्रम हेतु एक क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन 19 एवं 20 सितंबर 2019 को मॉडर्न पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग में किया गया। कार्यशाला में विद्यालय की दो हिंदी अध्यापिकाओं शिखा शर्मा तथा काजल सोनी ने भाग लिया। यह कार्यशाला केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दो विशेषज्ञों डॉ. विनोद 'प्रसून' तथा श्रीमती सुनीता शर्मा के निर्देशन में हुई। इस दो दिवसीय कार्यशाला के प्रथम सत्र में विषय स्थापना के पश्चात राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 पर चर्चा की गई तथा शिक्षण को अत्यंत पुनीत कार्य बताते हुए अध्ययनशीलता, धैर्य, यत्नशीलता, प्रेरक, निरंतरता तथा नवाचार का अध्यापक की प्रमुख विशेषता बताया गया। शुद्धता के स्थान पर अभिव्यक्ति मूलक कौशल को विकसित करने तथा वैयक्तिक पठन को प्रोत्साहित करने की बात की गई। शिक्षक की भूमिका पर चर्चा करते हुए विद्यार्थी की ज्ञानार्जन में मदद करने के साथ सीखने हेतु उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण तथा भाषागत गतिविधियों एवं क्रियात्मक शोध पर ध्यान देना शिक्षक का एक प्रमुख कर्तव्य बताया गया। खोजपूर्ण व्याकरण शिक्षण पर बल देते हुए शिक्षकों को सलाह दी गई कि व्याकरण के विभिन्न नियमों को समझाने के लिए कक्षा में नए–नए प्रयोग किए जाने चाहिए।

द्वितीय सत्र में हिंदी की मानक वर्तनी पर चर्चा की गई। पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग सिखाना, नुक्ते वाले शब्दों का अच्छा अभ्यास करवाना, भाषा को ध्वनि से जोड़ना आदि उपायों को अपनाने की बात कही गई। प्राथमिक कक्षाओं में हिंदी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए हिंदी वर्णमाला को संगीतबद्ध कर उसका ज्ञान देने तथा बारहखड़ी को पाठ्यक्रम में शामिल करने की सलाह दी गई। पाठ योजना को शिक्षक के व्यक्तित्व का दर्पण बताते हुए कहा गया कि पाठ योजना में तकनीकी प्रयोगों तथा नवाचारों को विशेष रूप से समाहित करना चाहिए। रचनात्मक लेखन करवाते समय छोटी कक्षाओं में वस्तु वर्णन करवाना चाहिए। लिखते समय विद्यार्थियों को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। कार्यशाला को प्रभावी बनाने के लिए विविध हस्तपत्रकों द्वारा विशेष अभ्यास करवाए गए।

कार्यशाला के दूसरे दिन दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम तथा आंतरिक मूल्यांकन में आए बदलावों पर विशेष चर्चा की गई। इस दौरान आंतरिक मूल्यांकन में शामिल विविध परीक्षणों तथा विषय संवर्धन गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी गई । प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत आने वाली गतिविधियों तथा मूल्यांकन के तरीकों के संबंध में बताया गया। अवधारणा मानचित्र का व्यावहारिक ज्ञान देते हुए विविध समूह बनाकर प्रत्येक समूह से एक–एक विषय पर अवधारणा मानचित्र बनवाया गया तथा प्रस्तुतीकरण भी करवाया गया। वाक्य रूपांतरण, समास तथा व्याकरण के अन्य विषयों के अवबोध के लिए कुछ विशेष तालिकाएँ बनवाई गईं जिससे विषय ग्राह्यता सुनिश्चित को जा सके। विषय को समझाने के लिए छोटे–छोटे सूत्रों तथा काव्य पंक्तियों के निर्माण की भी सलाह दी गई। गद्य–पद्य शिक्षण, अपठित अवबोध, सूचना लेखन, विज्ञापन लेखन आदि पर चर्चा के साथ पत्र लेखन के प्रारूप तथा उसके अभ्यास के विशेष बिंदुओं पर चर्चा की गई। कार्यशाला के समापन सत्र में प्रतिभागियों की विभिन्न जिज्ञासाओं तथा शंकाओं का समाधान भी किया गया।

कार्यशाला के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। दो दिवसीय कार्यशाला अत्यंत उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक रही।

Scanned by CamScanner